IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

बाबा नागार्जुन के काव्य में राष्ट्रीयता

अनु देवी (M.A. HINDI)

राष्ट्रीयता के स्वरूप और उसके प्रति भावनाओं को शब्दों में नहीं पिरोया जा सकता राष्ट्र के प्रति लगाव और भावना हमारी अंदरूनी चेतना है जिसे हम अनुभूत कर सकते है | राष्ट्र भक्ति मनुष की एक स्वभाविक वृति है और यही कारण है की मनुष्य अपने राष्ट्र ओर राष्ट्र के लोगों के प्रति एक सकारात्मक लगाव रखता है और अपने राष्ट्र को समृद्धिशील और उन्नति की राह पर देखना चाहता है, राष्ट्र की इस उन्नति के लिए वह स्वंय का बलिदान देने में भी स्वयं को गौरवान्वित समझता है। इस प्रकार यदि देखा जाये तो राष्ट्र के लोगों में यह चेतना जितनी अधिक प्रबल होगी वह राष्ट्र उतना अधिक सुदृढ़ औरउन्नत होगा |

देश के प्रति यह भावना तब और अधिक प्रबल हो उठती है जब कोई उस देश या उस देश के लोगों की एकता अखंडता तथा स्वतंत्र को क्षति पहुंचता है और उसकी अवहेलना करता है उस समय राष्ट्र के लोगों में एकत्व की भावना और प्रबल हो उठती है और लोग राष्ट्र के प्रति बड़े से बड़ा बलिदान और त्याग करन अपना परम कर्तव्य मानते है राष्ट्रीयता की इसी भावना के कारण निर्बल से निर्बल व्यक्ति भी त्याग और बलिदान करने से पीछे नहीं हटता|

राष्ट्र के प्रति अपने भावना व्यक्त करने का हर व्यक्ति, समुदाय व समाज के पास एक माध्यम होता है कोई अपनी राष्ट्रीयता देश की सीमा पर तैनात होकर व्यक्त करता है तो कोई देश को आर्धिक, सामाजिक व अंदरूनी रूप से सुदृढ़ बनाकर अपनी राष्ट्र भावना दर्शाता है, कोई राष्ट्रीयता अपनी जुबान से व्यक्त करता है तो कोई अपनी कलम के माध्यम से सुंदर सुंदर शब्दों द्वारा राष्ट्र प्रेम दर्शाता है |

बात यदि साहित्य की की जाये तो साहित्य भी राष्ट्र के प्रति अपनी भावना को व्यक्त करने में पीछे नहीं है। साहित्य चाहे हिंदी का हो, अंग्रेजी का हो, फ्रेंच का हो या किसी अन्य भाषा का साहित्य व साहित्यकार भी अन्य वर्गों की तरह ही अपनी राष्ट्रीयता को व्यक्त करने में पीछे नहीं हटता |

हिंदी साहित्य व उसके साहित्यकार भी राष्ट्र के प्रति अपने भावों को व्यक्त करने में संकुचित नहीं हुए। हिंदी के साहित्यकारों ने साहित्य की प्रत्येक विधा के द्वारा राष्ट्र के प्रति अपने विचार व्यक्त किये इस बात का अनुमान **"माखनलाल चतुर्वेदी"** की कविता **"पुष्प की अभिलाषा"** की निम्नलिखित पंक्तियों से लगाया जा सकता है –

"मुझे तोड़ लेना बनमाली,

उस पथ पर देना फैंक |

मातृभूमि को शीश चढ़ाने,

जिस पथ जावें वीर अनेक|"(1)

राष्ट्र कवि मैथलीशरण गुप्त, माखनलाल चतुर्वेदी, राष्ट्र कवि दिनकर, जयशंकर प्रसाद, महाप्राण निराला, सुभद्रा कुमारी चौहान व महान उपन्यासकार व उपन्यास सम्राट प्रेमचंद आदि सभी साहित्यकारों ने किसी न किसी रूप में अपनी राष्ट्र भावना को व्यक्त किया |

इन्ही साहित्यकारों में देश के प्रति अपनी राष्ट्र भावना को निभाने वाले हिंदी साहित्य जगत में प्रगतिवादी युग के प्रमुख कवि बाबा नागार्जुन का भी नाम आता है|

आदि से लेकर अंत तक अपनी वाणी, कविता तथा अन्य रचनाओं में यथार्थ की दुर्दशा व कटुता के प्रति व्यगं करने के कारण तथा अपने फक्कड व मस्तमौला स्वभाव के कारण इन्हें **"आधुनिक काल का कबीर"** भी कहा जाता है |

देश के प्रति प्रगाढ प्रेम को व्यक्त करते हुए नागार्जुन ने समस्त सुप्त मानव जाति को अपनी कवितों के माध्यम से जागरण का संदेश दिया-

"कांटे कहाँ कहाँ रोड़े हैं

कहाँ गढा है कहाँ रेत है

सभी साफ हो गया आज जनता सचेत है

कोटि कोटि कंठों से नि:स्वृत सुन सुनकरआक्रोश

भगवा-ध्वजाधारी देत्यों के उड़े जा रहे होश" {2}

नागार्जुन ने अपने काव्यों में कल्पना के पंखो को छोड़कर यथार्थ के मार्ग का वर्णन किया है | जहाँ प्राचीन कवियों ने भारत माता के स्वरूप को भावनात्मक रूप से अभ्यर्थना रूप में वर्णित किया तो वहीं बाबा नागार्जुन ने भारत माता के स्वरूप को यथार्थ की सुख सुविधाओं से सुसज्जित, फसलों व ऋतुओं को धारण करने वाली तथा अपने अंचल में खनिज पदार्थ व अन्य बहुमूल्य रत्नों को धारण करने वाली एक ठोस परतिमा के रूप में वर्णित किया है-

"तांबा जस्ता , कोक-कोयला

जाने क्या-क्या ढका पड़ा है|

देवी तुम्हारी वसुंधरा का बित्ता-बित्ता रत्नाकर|

जनयुग का यह रिक्त हस्त कवि

देवी, तुम्हारी लिए आज निज शीश झुकता,

जयजयजयहे भारत माता |"(3)

देश में व्याप्त कुशासन को देख वे क्षुब्ध हो उठे उन्होने तत्कालीन राजनीतिक व शासनिक परिस्थितियों को देखते हुए उनपर व्यंग्य किया| वे अपने मार्ग पर इतने अडिग तथा अपने व्यवहार में इतने प्रखर थे की तत्कालीन सरकार की बुराइयों को उजागर करते हुए वे अपने मार्ग से बिलकुल भी विचलित नहीं हुए | उनके इस अदम्य साहस का अंदाजा इस बात से लगाया जा सकता है की देश की तत्कालीन प्रधानमंत्री इंदिरा गाँधी की शासन व्यवस्था पर इन्होंने व्यंग्य खड़े कर दिए | वे कहते है-

"इंदु जी क्या हुआ आपको,

क्या हुआ आपको ?

सत्ता की मस्ती में,

भूल गयी बाप को ?

इंदु जी, इंदु जी क्या हुआ आपको ?

बेटे को तार दिया, बोर दिया बाप को !

क्या हुआ आपको ?

क्या हुआ आपको ?"(4)

'अकाल और उसके बाद'कविता के माध्यम से उन्होंने देश में फैली गरीबी, दरिद्रता व भुखमरी का जिस प्रकार से वर्णन किया वह शायद ही कहीं अन्य देखने को मिले| उनके इस कविता में इंसान तो इंसान उसके आस-पास के पशु -पक्षी भी इस अकाल से प्रभावित हुए जिसका उन्होंने बड़ी ही मार्मिकता से चित्रण किया-

"कई दिनों तक चूल्हा रोया, चक्की रही उदास,

कई दिनों तक कानी कुतिया सोई उसके पास|

कई दिनों तक लगी भीत पर छिपकलियों की गश्त,

कई दिनों तक चूहों की भी हालत रही शिकस्त|"(5)

देश में बढ़ रहे साम्राज्यवाद और पूंजीवाद पर उनकी वाणी उग्र व्यंग्यात्मक रूप धारण कर लेती है | उनका मानन था की देश सवतन्त्र होने के बाद भी वह पूंजीवाद और साम्राज्यवाद की और अग्रसर हो रहा है| देश में स्थिति ऐसी हो गयी है कि अमीर और अमीर होता जा रहा है तथा गरीब अपनी भूख मिटने के लिए अपना सर्वस्व लुटाता जा रहा है |

अपने काव्य में उन्होंने दर्शाया कि व्यापरी, जमीदार तथा धन्नासेठ केवल अपनी तिजोरियां भरने में लगे है उन्हें देश की जनता , मजदुर व किसनो की दशा से कोई मतलब नहीं है | उनकी भूख, शिक्षा व अन्य सुविधाओं से उन्हें कोई औचित्य नहीं है |

देश की इसी स्थिति का वर्णन उन्होंने **"राष्ट्रीय-गीत"** कविता में किया और पूंजीवाद पर व्यंग कसा-

"खून पसीना किया अपने एक जुटाई फ़ीस,
आंखे निकल आई पढ़-पढ़ के, नम्बर आये तीस|
शिक्षा मंत्री ने सीनेट से कहा- " अजी शाबाश
सोना हो जाता हराम यदि ज्यादा होते पास"
फेल पुत्र का पिता दुखी है, सर धुनती माता,
जण गण मन अधिनायक जय हे भारत भाग्य विधाता |"(6)

बाबा नागर्जुन की कविताओं का क्षेत्र इतना व्यापक है कि वे समाज के प्रत्येक वर्ग तक झांक आये| चाहे वः अमीर वर्ग हो या गरीब, स्त्री वर्ग हो या पुरुष, अपेक्षित वर्ग हो या उपेक्षित, पूंजीवाद हो सम्राज्यवाद उन्होंने यथार्थ के आधार पर ही सभी की परिस्थितियों का वर्णन किया | समाज से उपेक्षित व ठुकराएँ लोगों, वर्ण व्यवस्था व अस्पृश्यता से पीड़ित आदि का वर्णन भी उन्होंने ने किये किंतु अपनी कवितों में नागार्जुन ने इन सभी पीड़ित लोगों को अपने अधिकार प्राप्त करने वाले तथा क्रन्तिकारी के रूप में वर्णित किया है | वे कहते है-

"ऐसे तो कभी नहीं हुआ

हरिजन माताएं अपने भ्रूणों के जनकों को

खो चुकी हों एक पैशाचिक दुष्कांड में

एक नहीं दो नहीं, तीन नहीं,

तेरह के तेरह अभागे-

अकिंचन मनुपुत्र

जिंदा झोंक दिए गये हों

प्रचण्ड अग्नि की विकराल लपटों में

साधन संपन उंची जातियों वाले

ऐसा तो कभी नहीं हुआ था |"(7)

निष्कर्ष तौर पर कहा जाये तो बाबा नागर्जुन के काव्य में राष्ट्रीयता व राष्ट्र के प्रति सद्भावना कूट कूट कर भरी है | उन्होंने अपने काव्य में न केवल राष्ट्र व समझ के प्रति अपने भाव उजागर किये बल्कि देश की सुप्त जनता को आह्वान के माध्यम से जगाने का कार्य भी किया | जहाँ एक तरफ देश की समृधि व साधन सम्पनता को वर्णित किया तो वहीं उसी समृद्धि व सम्पन्नता को लुटने वाले लोगों, राजनीतिक पार्टियों व सरकारों पर कटाक्ष भी किया |

उनके काव्य का केंद्र बिंदु ही यथार्थ है इस लिए उन्होंने राष्ट्र में फैली गरीबी, बेरोजगारी, दरिद्रता, भुखमरी, पिछड़ापन, स्त्री समस्या, शिक्षा की सम्स्य, तथा वर्ण व्यवस्था व अस्पृश्यता को माध्यम बनाकर अपने काव्य की रचना बिना किसी रोक-टोक, निर्भयता व अपने मार्ग पर अटल रह कर करते रहे | अपने काव्य के माध्यम से देश की परिस्थियों को उजागर करने से व खुद स्वंय को भी नहीं रोक पाए |

इस लिए वे एक स्थान पर स्वंय लिखते है –

प्रतिबद्ध हूँ

सम्बद्ध हूँ

आबद्ध हूँ

प्रतिबद्ध हूँ, जी हाँ, प्रतिबद्ध हूँ-

बहुजन समज की अनुपल प्रगति के निमित

संकुचित ' स्व' की आपधापी के निषेधार्थ...

अविवेकी भीड़ की 'भेड़ियाधसान'के खिलाफ ...

अन्य बधिर 'व्यक्तिओं' कोसही राह बतलाने के लिए....

प्रतिबद्ध हूँ

जी हाँ शतधा प्रतिबद्ध हूँ |" (8)

संदर्भ :-

1. **माखनलाल चतुर्वेदी – 'पुष्प की अभिलाषा' कविता**
2. **नागार्जुन- ' युगधारा' / 'शपथ' कविता**
3. **नागार्जुन – 'युगधारा'/ 'भारतमाता' कविता**
4. **नागार्जुन – 'खिचड़ी विप्लव देखा हमने' / 'इंदु जी क्या हुआ आपको' कविता**
5. **नागार्जुन – 'सतरंगे पंखों वाली' / 'अकाल ओर उसके बाद' कविता**
6. **नागार्जुन – ' इस गुब्बारे की छाया में' / ' रष्ट्रीय गीत' कविता**
7. **नागार्जुन - ' चुनी हुई रचनाएँ' / 'हरिजन गाथा' कविता**
8. **नागार्जुन – 'चुनी हुई रचनाएँ / ' प्रतिबद्ध हूँ' कविता**

(अनु देवी)